बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय दस

अस्तित्व -संबंधी दृष्टिकोण : अच्छे का चुनाव करना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:27) 4

II. ज्ञान प्राप्त करना (4:23) 5

A. अनुभव (5:10) 5

1. भौतिक (6:49) 6

2. मानसिक (11:59) 6

B. कल्पना (14:38) 7

1. रचनात्मकता (15:36) 7

2. समय (20:11) 8

3. दूरी (21:24) 8

III. ज्ञान का मूल्यांकन (24:43) 9

A. तर्क-वितर्क (25:00) 9

B. विवेक (31:58) 10

C. मनोभाव (37:00) 11

IV. ज्ञान को लागू करना (44:04) 13

A. हृदय (45:18) 13

1. समर्पण (46:29) 13

2. अभिलाषाएं (51:24) 15

B. इच्छा (55:42) 15

V. उपसंहार (1:03:22) 17

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 18

उपयोग के प्रश्न 23

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:27)

सही कार्य करने के लिए हमें :

- सही जानकारी लेनी होती है
- इसकी सही जांच करनी होती है
- इसे सही रूप में लागू करना होता है

मनुष्य नैतिक निर्णय लेने में भिन्न सामर्थ्यों और योग्यताओं का प्रयोग करते हैं :

- अनुभव
- कल्पना
- विवेक
- अन्तःकरण
- भावनाएं
- ह्रदय
- इच्छा

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

II. ज्ञान प्राप्त करना (4:23)

A. अनुभव (5:10)

अनुभव : लोगों, वस्तुओं और घटनाओं की जानकारी।

मनुष्य कई प्रकार के अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करता है।

प्रत्येक अनुभव ज्ञान उत्पन्न करता है :

- परमेश्वर के बारे में
- या हमारे चारों ओर के संसार के बारे में
- या हमारे अपने बारे में

ज्ञान बुराई से अच्छाई को पहचानने में हमारी सहायता करता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. भौतिक (6:49)

वह मुख्य तरीका जिसके द्वारा हम परमेश्वर, लोगों, वस्तुओं, हमारे वातावरण एवं अन्य कई घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

परमेश्वर ने हमें ज्ञान प्राप्त करने के महत्वपूर्ण साधनों के रूप में हमारी इन्द्रियां दी हैं। फलस्वरूप, हमारी इन्द्रियां विश्वसनीय हैं।

मनुष्यजाति के पाप में पतन ने हमारे संवेदी बोधों को प्रभावित कर दिया है :

- बीमारियाँ
- भौतिक असामान्यताएं
- भ्रम

2. मानसिक (11:59)

ज्ञान प्राप्त करने की सारी प्रक्रिया की जांच हमारे मानसिक अनुभव के दृष्टिकोण से की जा सकती है। अंत में हमारा ज्ञान हमारे मन रहता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे भौतिक अनुभव के समान, हमारा मानसिक अनुभव भी पाप से प्रभावित होता है।

B. कल्पना (14:38)

कल्पना उन बातों की मानसिक तस्वीरों को बनाने की हमारी योग्यता है जो हमारे अनुभव से परे की हैं।

1. रचनात्मकता (15:36)

हम जो कुछ भी बनाते या रचते हैं उस सब में कल्पना शामिल होती है।

कल्पना नैतिक प्रारूपों और रूपकों को बनाने और उन्हें पहचानने में हमारी सहायता करती है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. समय (20:11)

कल्पना उन बातों को सोचने के लिए भी हमारी सहायता कर सकती है जो उस समय नहीं पाई जातीं जब हम उनके बारे में सोच रहे होते हैं।

भविष्य की कल्पना करने की हमारी योग्यता के बिना, हम हमारे जीवनों में परमेश्वर के वचन को लागू नहीं कर पाएंगे।

3. दूरी (21:24)

जब लोग और वस्तुएं हमसे इतनी दूर होती हैं कि वे हमारे अनुभव का हिस्सा नहीं होतीं, तो हमें उनके बारे में सोचने के लिए हमारी कल्पनाओं का इस्तेमाल करना पड़ता है।.

हमें पवित्र आत्मा पर निर्भर रहना जरूरी है, ताकि वह हमारी सहायता करे :

- परमेश्वर के वचन के अनुसार हमारी कल्पनाओं की जाँच करने में
- हमारी योग्यताओं एवं सामर्थ्यों से इसका सांमजस्य करवाने में

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. ज्ञान का मूल्यांकन (24:43)

ज्ञान का मूल्यांकन: हम उस जानकारी का मूल्यांकन करते हैं जो हमने प्राप्त की है।

A. तर्क-वितर्क (25:00)

जब मसीही नैतिक शिक्षा में तर्क-वितर्क की भूमिका के बारे में सोचते हैं तो प्रायः पराकाष्ठा तक पहुँच जाते हैं :

- पराकाष्ठा 1: अन्य सभी योग्यताओं और सामर्थ्यों से बढकर तर्क-वितर्क पर भरोसा किया जाना।
- पराकाष्ठा 2: तर्क-वितर्क पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत अगुवाई को नजरअंदाज करता है।

हमारी बुद्धि परमेश्वर से आती है, और पवित्र आत्मा इसका सही इस्तेमाल करने में हमारी सहायता करता है। हमारी निर्णय लेने की प्रक्रिया में इसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

तर्क-वितर्क :

- तार्किक अनुमानों और तार्किक नियमितता को जांचने की क्षमता।
- स्पष्ट और व्यवस्थित रूपों में सोचने एवं ऐसे निर्णय लेने की योग्यता जो विचारों के बाइबल-आधारित प्रारूपों के अनुसार हो।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब भी इन्द्रिय बातें मानसिक रूप से क्रियान्वित की जाती हैं, तो हम कुछ हद तक हमारे तर्क-वितर्क को क्रियान्वित करते हैं।

तर्क-वितर्क भिन्न वास्तविकताओं की एक-दूसरे के साथ तुलना करने की अनुमति देता है ताकि हम उनके तार्किक संबंधों को निर्धारित कर सकें।

तर्क-वितर्क वास्तविकता के कथनों को कर्त्तव्य के कथनों से जोड़ने में भी सहायता करता है।

पवित्रशास्त्र तर्क-वितर्क का इस्तेमाल करता है, और वह हमसे सदैव ऐसा ही करने को कहता है।

B. विवेक (31:58)

विवेक : परमेश्वर द्वारा दी गयी अच्छे और बुरे को पहचानने की योग्यता।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारा विवेक :

- सच्ची अभिपुष्टि दे सकता है कि हमारा व्यवहार परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है।

- सही रूप से दोषी के रूप में हमारी निंदा और पश्चाताप करने के लिए हमें उत्साहित कर सकता है।

हमारा विवेक पाप के द्वारा भ्रष्ट हो चुका है और समय-समय पर गलतियाँ करता है :

- उन बातों की निंदा करने में जो अच्छी हैं

- उन बातों को प्रमाणित करने में जो पापमय हैं

पाप के भ्रष्ट करने के प्रभाव का समाधान पवित्र आत्मा की शक्ति पर निर्भर रहना है जो हमारे भीतर कार्य करता है जब हम हमारे विवेक को परमेश्वर के वचन के समरूप बनाने का प्रयास करते हैं।

C. मनोभाव (37:00)

मनोभाव : आंतरिक भावनाएं; हमारी नैतिक संवेदनशीलता के भावनात्मक पहलू।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे मनोभाव प्रायः वास्तविकताओं के प्रति हमारी आरंभिक व्याख्याएँ होते हैं।

मनोभाव यह निर्धारित करने के लिए बहुत उपयोगी साधन हैं कि हमारे आधुनिक जीवनों में परमेश्वर का वचन किस प्रकार लागू होता है।

- तरस या रहम की भावनाएं हमें जरुरतमंदों की सहायता करने के महत्व को देखने में मदद करती हैं।
- क्रोध की भावना न्याय का अनुसरण करने में हमें उत्साहित कर सकती है।
- आनंद के अनुभव परमेश्वर की भलाई को देखने और उसकी पुष्टि करने में योग्य बना सकते हैं।
- डर हमें पाप को दूर करने के तरीके ढूँढने में प्रेरित कर सकता है।
- दोष या ग्लानि की भावनाएं हमें ऐसे समयों के बारे में सचेत कर सकती हैं जब हम पाप में गिरे थे।
- प्रेम की भावनाएं हमें पूर्ती करने, रक्षा करने, डांटने और दया दिखाने के बारे में सिखा सकती हैं।

हमारे मनोभाव भी पाप से भ्रष्ट हैं इसलिए गलती कर सकते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमें हमारे मनोभावों को पवित्र आत्मा और परमेश्वर के वचन में समर्पित कर देना चाहिए, और परमेश्वर द्वारा दी गयी योग्यताओं और सामर्थ्यों के साथ उन्हें सांमजस्य में रखना चाहिए।

IV. ज्ञान को लागू करना (44:04)

इस बात का पता लगाना ही पर्याप्त नहीं है कि क्या करना चाहिए। हमें सही कार्य करने का विवेकपूर्ण निर्णय लेना है और उस निर्णय को पूरा करने का प्रयास करना है।

A. ह्रदय (45:18)

ह्रदय : नैतिक ज्ञान और नैतिक इच्छा का स्थान; हमारा सम्पूर्ण आन्तरिक व्यक्तित्व जिसे उस दृष्टिकोण से समझा जाता है कि हम क्या जानते हैं और हमारे ज्ञान से हम क्या करते हैं।

1. समर्पण (46:29)

परमेश्वर के प्रति हमारा समर्पण को हमारे सम्पूर्ण जीवन की आधारभूत दिशा को संचालित करना चाहिए, और हमारे अन्य सभी समर्पण इस सबसे आधारभूत समर्पण के अधीन होने चाहिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे समर्पण सदैव हमारे कार्यों में व्यक्त होते हैं :

- हम अच्छे कार्यों में परमेश्वर के प्रति हमारे समर्पण को व्यक्त करते हैं।

- हम बुरे कार्यों में पाप के प्रति हमारे समर्पण को व्यक्त करते हैं।

हम उन समर्पणों के अनुसार चयन करते हैं जिसे चयन करते समय हम सबसे अधिक महसूस करते हैं।

क्योंकि पाप अभी भी हमारे अन्दर वास करता है, इसलिए हर मसीही के मिश्रित समर्पण होते हैं।

हम पवित्र आत्मा के प्रति समर्पित रहते हैं जब वह हमारे समर्पणों को परमेश्वर के चरित्र के सदृश्य बना देता है। हम उन समर्पणों को ठुकरा देते हैं बदल देते हैं जो पाप से निकलते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. अभिलाषाएं (51:24)

एक मसीही के ह्रदय में अच्छी और बुरी दोनों अभिलाषाएं पाई जाती हैं।

केवल दो प्रकार के निर्णय होते हैं —अच्छे और बुरे :

- हर अच्छा निर्णय पवित्र आत्मा की ओर से दी गयी अभिलाषाओं के अनुसार लिया जाता है।

- हर बुरा निर्णय पापमय अभिलाषाओं के अनुसार लिया जाता है।

हमारी सबसे बड़ी अभिलाषा परमेश्वर को प्रसन्न करना होनी चाहिए।

B. इच्छा (55:42)

इच्छा : निर्णय लेने की हमारी क्षमता; संकल्प; चुनने की हमारी योग्यता।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारी इच्छा हमारे पतित स्वभाव से प्रभावित होती है। एक मसीही के लिए :

- पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले निर्णय लेने में योग्य बनाता है।

- हमारे भीतर वास करने वाला पाप हमें पापमय निर्णय लेने के लिए भी लालायित कर सकता है।

हमारी इच्छा हो सकती है :

- सक्रिय

- निष्क्रिय

हमारी इच्छा उन सब में शामिल होती है जो हम सोचते, कहते और करते हैं। यह वह क्षमता है जिसका प्रयोग हम हमारे जीवन के प्रत्येक निर्णय लेने में करते हैं।

हमारी इच्छा वही होनी चाहिए जिसकी आज्ञा परमेश्वर का वचन देता है, और हमें पवित्र आत्मा को अनुमति देनी आवश्यक है कि वह सकारात्मक रूपों में हमारी इच्छा को प्रभावित करने के लिए कार्य करे।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु द्वारा एक नैतिक निर्णय लेने में सारी अस्तित्व-संबंधी योग्यताओं और क्षमताओं का उदाहरण :

- ज्ञान को प्राप्त किया
    - अनुभव
    - कल्पना
- ज्ञान को जांचा
    - तर्क-वितर्क
    - विवेक
    - मनोभाव
- ज्ञान को लागू किया
    - ह्रदय
    - इच्छा

V. उपसंहार (1:03:22)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. अनुभव क्या है? ज्ञान को प्राप्त करने में यह कैसे योगदान देता है?

2. कल्पना क्या है? परमेश्वर, संसार, और हमारे स्वयं के बारे में सीखने और सोचने में हमारी कल्पनात्मक योग्यताएं कैसे महत्वपूर्ण हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में ज्ञान प्राप्त करना महत्वपूर्ण क्यों है?

4. तर्क-वितर्क क्या है? नैतिक शिक्षा में हमें तर्क-वितर्क का इस्तेमाल क्यों और कैसे करना चाहिए?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. विवेक क्या है और इसका इस्तेमाल कैसे किया जाना चाहिए?

6. मनोभाव क्या हैं? नैतिक निर्णय लेने में वे हमारी सहायता कैसे करते हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में ज्ञान को जांचना क्यों महत्वपूर्ण है?

8. हृदय क्या है? निर्णय लेने की प्रक्रिया में यह कैसे कार्य करता है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. इच्छा क्या है? निर्णय लेने की प्रक्रिया में यह क्या भूमिका अदा करती है?

10. नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में ज्ञान को लागू करना क्यों महत्वपूर्ण है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. आपने अतीत में नैतिक निर्णय कैसे लिए हैं? आप किन आंतरिक प्रवृतियों और क्षमताओं पर सबसे अधिक निर्भर रहे हैं? किन आंतरिक प्रवृतियों और क्षमताओं को अपने नजरअंदाज किया है?

2. पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते समय कल्पना का इस्तेमाल करना क्यों महत्वपूर्ण है?

3. किस प्रकार तर्क-वितर्क की भूमिका की एक सही समझ अच्छे नैतिक निर्णयों की ओर अगुवाई करती है?

4. ऐसे समय के बारे में चर्चा करें जब आपका विवेक गलत था। हम कैसे भेद कर सकते हैं कि कब हमारा विवेक गलत था और कब सही?

5. यदि हम अपने पाप से भावनात्मक रूप से उदासीन या विमुख महसूस करते हैं, तो हमें पश्चाताप की ओर कैसे लाया जा सकता है?

6. लूका 6:45 में, यीशु ने हमारे समर्पणों को वे बातें कहा जो हमारे ह्रदय में बसी रहती हैं और जो कार्यों में अभिव्यक्त होती हैं। आपके अपने हृदयों के समर्पणों के बारे में आपके कार्य और आपकी बातचीत क्या दर्शाते हैं?

7. व्यावहारिक रूप से कहें तो, हमारी आंतरिक प्रवृतियाँ, योग्यताएं और क्षमताएं एक-दूसरे की विरोधी होती हैं। इन परिस्थितियों में हम इस बात का निश्चय करने के लिए ऐसे क्या कार्य कर सकते हैं कि हम बाइबल पर आधारित, जिम्मेदार निर्णय लें?

8. इस अध्याय से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

9. *बाइबल पर आधारित निर्णय लेना* की इस श्रंखला से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org